संस्कृत-भाषा सीखने की सरल और वैज्ञानिक विधि

आचार्य भा.प्र.त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

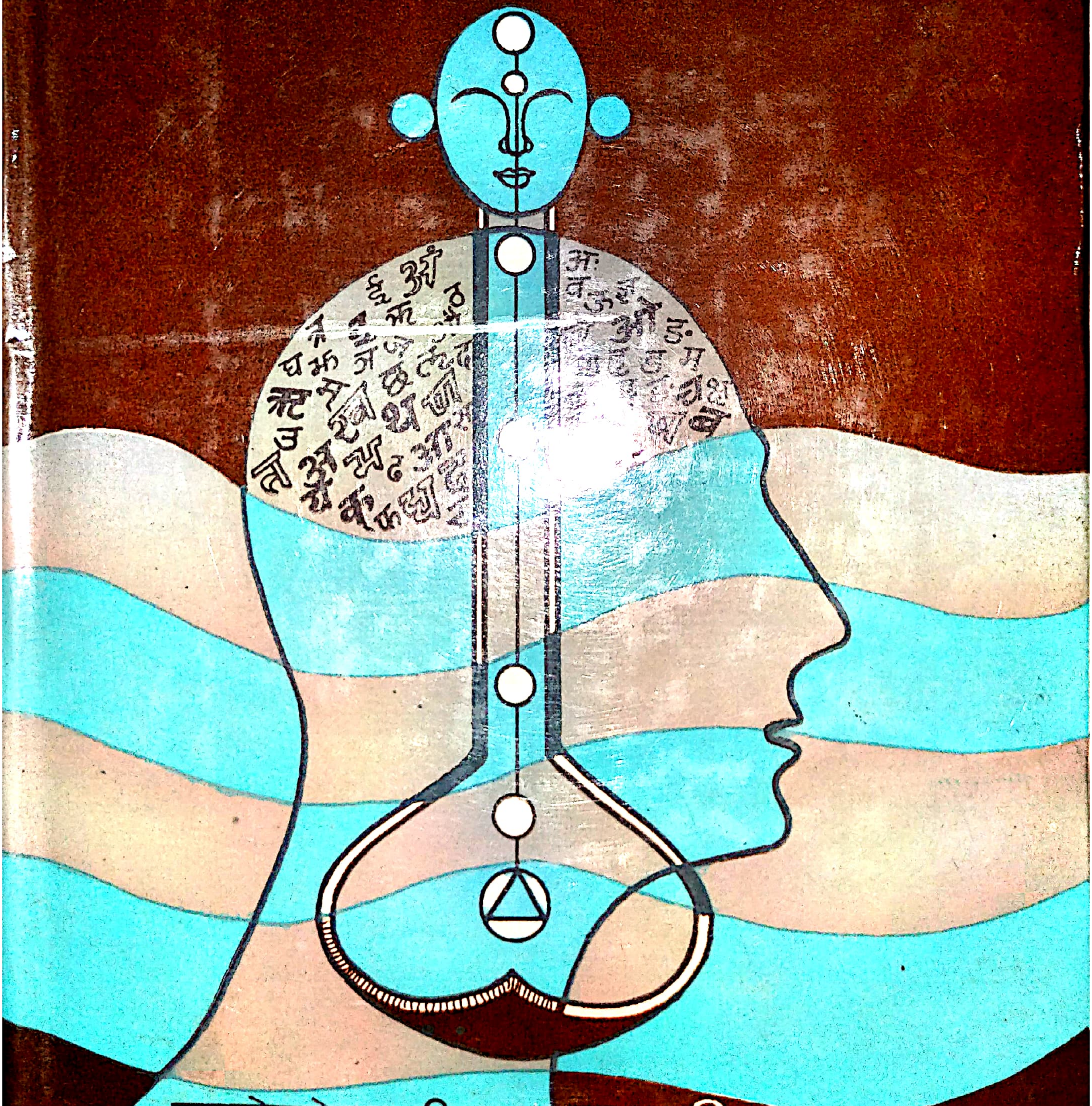

वाग्योगचेतना-पीठम् • वाराणसी

वाग्योगचेतना-ग्रन्थमाला

(सप्तमपुष्पम्)

संस्कृतभाषा
सीखने की
सरल और वैज्ञानिक विधि

(वर्णकाण्डम्)

प्रणेता

महामहोपाध्याय

डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

निदेशक

अनुसन्धान संस्थान,

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय,

वाराणसी ।

सहसम्पादक

श्रीबालमुकुन्द लोहिया

वाराणसी

२०४७ वि० सं०

प्रकाशक :

[illegible]

[illegible]

[illegible] वाराणसी-[illegible]

दूरभाष : [illegible]

[illegible] : [illegible]

मूल्यम् : [illegible]

सर्वाधिकारः सुरक्षितः

मुद्रक :

[illegible]

[illegible]

[illegible] वाराणसी

प्रकाशक :
संस्कृत भारती
वाग्योगचेतनाप्रकाशन
बी. ३/१३१ ए, शिवाला, वाराणसी-२२१००१
दूरभाष : ३११७०६

प्रथमसंस्करणम् १९९० ई० ।
मूल्यम् : चत्वारिंशन्मुद्रा: (४०.००)
सर्वाधिकारः प्रणेत्रधीनः

मुद्रकः
वाचस्पति त्रिपाठी
वाग्योग प्रिंटिंग् प्रेस
शिवाला, वाराणसी।

नैवेद्यम्

अमर भाषा संस्कृत भारतवर्ष के अध्यात्म की आवाज है। अध्यात्म का अर्थ होता है—आत्मा के अन्दर। अमर इसलिए कि वह प्राचीनतम होते हुए भी आज किसी भी भाषा से अधिक सशक्त एवं युवती है। यह उद्‌घाटित सत्य है कि केवल संस्कृत भाषा ही एक ऐसी भाषा है जो सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और भाषिक दृष्टि से भारत वर्ष की अखण्डता को सुरक्षित रख सकने में समर्थ है। यही एक भाषा है जो वैविध्यमय भारत वर्ष की प्रादेशिक मणियों को एकसूत्रता में पिरोये रख सकती है। प्रत्येक दृष्टिकोण से संस्कृत भाषा पढ़ना भारतीय राष्ट्रियता की भाँति भारतीय जन की अनिवार्य आवश्यकता है।

इस तथ्य को उद्‌घाटित करने के लिए सन् १९७७ में मेरे गुरुजी डॉ० वागीश शास्त्री की 'भारत में संस्कृत की अनिवार्यता क्यों' नामक पुस्तक चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी से प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात् मैंने गुरुजी से निवेदन किया कि 'संस्कृत की अनिवार्यता क्यों' यह बात बताना तो अधिक कठिन नहीं है। संस्कृत सहजतः लोक-ग्राह्य कैसे हो यह बताना बहुत कठिन है। आज तो स्थिति यह है कि विद्यार्थी व्याकरण की कठिनाई के कारण संस्कृत को पढ़ना नहीं चाहते हैं। कारण आज की शिक्षा-पद्धति कण्ठस्थीकरण की नहीं रह गई है। आज का विद्यार्थी अपने विषय को भलीभाँति समझना चाहता है। इसकी व्यापारिक उपादेयता न होने के कारण कहीं-कहीं तो लोग इसे मृतभाषा भी कहने लगते हैं।

इस विषय में पूछने पर गुरुजी ने बताया कि शारीरिक रूप से तो हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र हो गया है, परन्तु मानसिक परतन्त्रता से मुक्त नहीं हो पाया है। ऐसी मानसिकता वाले ही इसे मृतभाषा कह स्वयं को गौरवान्वित समझते हैं।

भारत के अलावा 'यूनान' 'मिश्र' (ईजिप्ट) एवं रोम की भी संस्कृतियाँ बहुत पुरानी रही हैं। इस समय भारतीय संस्कृति के अलावा सभी प्राचीन संस्कृतियों की छवि विश्वपटल से मिट चुकी है। केवल भारतीय संस्कृति हजारों वर्षों से आज तक जीवित है। हजारों हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति के सुरक्षित रहे आने का रहस्य है—भारत पर

विषयसूची

			पृष्ठसंख्या
प्रथमः पाठः (क)			
मातृकापाठ अथवा वर्णमाला	....	....	१-४
प्रथमः पाठः (ख)			
मातृका	....	....	५-१०
द्वितीयः पाठः			
स्वर तथा व्यञ्जन	...	...	१०-१३
तृतीयः पाठः			
स्वर वर्णों का विकास अथवा विस्तार	....	....	१४
तृतीयः पाठः (क)			
१—दीर्घ-विकास	....	...	१४-१५
तृतीयः पाठः (ख)			
२—अर्धस्वर-विकास	...	....	१५-१७
तृतीयः पाठः (ग)			
३—गुणविकास	....	....	१७-१६
तृतीयः पाठः (घ)			
४—वृद्ध-विकास	....	....	१८-२२
चतुर्थः पाठः			
विष्णुस्वरूप कूटस्थ स्वर वर्ण 'अ'	...	....	२२-२६
पञ्चमः पाठः			
इ अथवा ई का चार प्रकार का विकास	....	...	२७-३०
षष्ठः पाठः			
'उ' अथवा 'ऊ' का चार प्रकार का विकास	....	...	३१-३४
सप्तमः पाठः			
ऋ, ॠ तथा ऌ, ॡ का चार प्रकार का विकास	....	....	३५-३८
अष्टमः पाठः			
ए (=अ+इ)	....	....	३८-४३
नवमः पाठः			
ऐ (=अ+ए)	....	...	४४-४६

			पृष्ठसंख्या
दशमः पाठः			
परवर्ती स्वर वर्णों के कारण 'ओ' का परिवर्तन	....	....	४६-४८
एकादशः पाठः			
परवर्ती स्वरवर्णों के कारण 'ओ' का परिवर्तन	...	....	४८-५०
द्वादशः पाठः			
अयोगवाह=अनुस्वार तथा विसर्ग	....	....	५०-५४
द्वादशः पाठः (क)			
पदान्त अनुस्वार और वर्गबाह्य वर्ण	....	....	५४-५८
द्वादशः पाठः (ख)			
वेदों में सर्वश्रेष्ठ ॐ का शुद्ध उच्चारण	....	...	५८-५९
स्वरों का स्वरों के साथ मेल और उनके उदाहरण	....	....	६०-८८
स्वरविकासचक्रम् एवं मानववीणा	...	....	८९-९०
त्रयोदशः पाठः			
व्यञ्जन वर्णों की कुछ विशेषताएँ	....	...	९१-९३
चतुर्दशः पाठः			
व्यञ्जन वर्णों का प्रथम विकास	...	....	९४-९५
पञ्चदशः पाठः			
गर्भवर्गीय तथा सीमावर्गीय व्यञ्जन वर्ण	....	...	९६-९७
षोडशः पाठः			
व्यञ्जन वर्णों का द्वितीय विकास	....	....	९८-९९
सप्तदशः पाठः			
दास महाप्राण को अल्पप्राण में बदलना	....	....	१००-१०१
अष्टादशः पाठः			
गर्भवर्गीय कठोर वर्ण दासस्थानीय 'न्' के कारण वर्गबाह्य 'स्' का सहारा लेगा	....	....	१०२-१०४
एकोनविंशः पाठः			
ट् के दासस्थान पर रहने पर स्वामिस्थानीय नित्यदास वर्ण का सारूप्य परिवर्तन	....	...	१०५-१०६
विंशः पाठः			
'ल्' के स्वामिस्थानीय होने पर दन्त्य वर्णों का सारूप्य परिवर्तन	...	...	१०७-११०

पृष्ठसंख्या

एकविंश: पाठ:
चवर्ग कवर्ग का सदा समर्पित दास ११०-१११

द्वाविंश: पाठ:
स्वामी स्वर के प्रभाव से ह्रस्वस्वरपूर्वक
ङ् ण् न् की प्रतिध्वनि ११२

त्रयोविंश: पाठ:
ऋ र् ष वर्णों के प्रभाव से स्वामिस्थानीय
नकार की मूर्धन्यता ११३-११५

चतुर्विंश: पाठ:
सानुनासिक प्रभाव से वर्गगत दास वर्ण की
सानुनासिकता ११६-११८

पञ्चविंश: पाठ:
वर्गबाह्य र् स् ष् के स्थान पर विसर्ग ११८-१२०

षड्विंश: पाठ:
सीमावर्ती कठोर वर्णों के प्रभाव ने शक्तिविशिष्ट
'स्' को 'ष्' १२०-१२२

सप्तविंश: पाठ:
कस्क:, सद्यस्क:, कौतस्कुत: १२३-१२४

अष्टाविंश: पाठ:
अ-व्यतिरिक्त स्वामिवर्णों के रहने पर 'स:' और
'एष:' के विसर्ग का लोप १२५-१२६

एकोनत्रिंश: पाठ:
दासस्थानीय वर्गबाह्य वर्णपरिवर्तन विचार १२७-१२८

त्रिंश: पाठ:
दास हकार परिवर्तन विचार १३१-१३३
व्यञ्जनों का स्वर-व्यञ्जनों के साथ मेल और उदाहरण १३४-२३१
मुखगह्वर के २६ चित्र २३१-२६०

★

संस्कृत-भाषा

सीखने की

सरल और वैज्ञानिक पद्धति

वर्णकाण्डम्

प्रथमः पाठः (क)

मातृका-पाठ अथवा वर्णमाला

१४ स्वर वर्ण

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ

२ अयोगवाह

अं अः

३३ व्यञ्जन वर्ण

वर्गगत २५ वर्ण

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्

वर्ग-बाह्य ८ वर्ण

य् व् र् ल् (अर्धस्वर)

श् ष् स् ह् (विसर्गज)

संयुक्त वर्ण

क्ष्, त्र्, ज्ञ्

जौहरी प्रिन्टर्स, वाराणसी